आनंद में रहने के सुनहरे पाँच सूत्र...

तीन दोस्त लम्बी यात्रा का आनंद लेने के लिए निकलते हैं। दो मित्र कार में बैठते हैं और एक मित्र मोटर साइकिल पर सवार होता है।

वे शहर के बाहर निकलकर खूब मौज मस्ती के साथ तेज़ गति से अपने अपने वाहनों को चलाने का आनंद ले रहे होते हैं। एक्सीडेंट होने की परवाह नहीं। पुलिस का भी डर नहीं। वे अपनी मस्ती में मशगूल हैं। दोनों वाहन अमर्यादित गति व खतरे का संकेत दे रही है।

ऐसे में रास्ता पार करती गाय कार के साथ टकराती है और कार पलट जाती है। अंदर बैठे दोनों युवक गम्भीर रूप से घायल हो जाते हैं। मोटर साइकिल वाला मित्र भी ये दृश्य देख संतुलन खो बैठता है और मोटर साइकिल डिवाइडर पर चढ़कर खाई में गिरकर पटकती है। उसे भी हाथ पैरों में गम्भीर चोट लग जाती है।

- ब्र.कु. गंगाधर

लोग इकट्ठे हो जाते हैं और चोटिल हुए लड़कों से पूछते हैं : 'कहाँ जाने निकले थे? दूसरे गाँव? बैग जैसा तो कुछ साथ में दिखता नहीं है।'

कार में बैठे दो मित्र में से एक होश में था। उसने कहा: 'कहीं भी नहीं। स्पीड का मौज लेने, सिर्फ आनंद की खातिर हम निकले थे।'

वहाँ भीड़ में खड़े लोगों ने कहा: 'युवाओं की यही मुसीबत है। उनको सब आता है, लेकिन स्वयं को सम्भालना नहीं आता। जोखिम वाले आनंद के पीछे मशगूल बनने के लिए पहले सौ बार विचार कर लेना चाहिए।'

लोग इन तीनों को अस्पताल पहुँचाते हैं। पुलिस केस होता है।

रोमियो एंड जुलियट में शैक्सपीयर ने आनंद के पीछे पागल बने युवाओं को चेतावनी के स्वर में कहा है : 'तीव्र आनंद का अंत भी तीव्रता से होता है। समझ और संयम की लकीर को पार करने से 'वायलेंट' के लिए धुआँ-फुआँ करने को तैयार हो जाते हैं, इसलिए मान लेना चाहिए कि उसका अंत भी दु:ख ही होगा।'

मनुष्य जीवन को आनंद का अवसर मानता है। उसे खुश रहना है। मनोवेदना और दु:ख दर्द को भूलना है, हताशा से उभरना है और निराशा को अलविदा कहना है। परिणामस्वरूप वो हथकंडे अपनाकर आनंद के लिए कुछ भी जोखिम उठाने को तैयार हो जाता है। आनंद, एक पवित्र वस्तु है, लेकिन उसमें संयम का सुमेल ना हो तो वो आफत के गहरे बादल से घिरने लगता है। विवेक शून्य मनुष्य आनंद को प्राप्त नहीं कर सकता। आनंद को भोगने के बदले आनंद ही मनुष्य का भोग ले लेता है। आनंद वस्तुओं में नहीं होता, लेकिन वस्तु को परखने की मनुष्य की दृष्टि में होता है। इसीलिए हे मनुष्य...आनंद के क्षेत्र अलग-अलग होते हैं। हकीकत में सच्चा आनंद, आप जो भी करते हो वो निष्ठा और समर्पण के साथ करते हैं उसमें होता है। आजकल मनुष्य का अकेलापन बढ़ता जाता है, इसलिए वो आनंद को बाँट नहीं सकता। दूसरे को आमंत्रित कर अपने धन, वैभव, सम्पत्ति एवं सत्ता का प्रदर्शन करता है। इससे ही अहंकार को पुष्ट कर संतुष्टता प्राप्त करता है, लेकिन आत्म-प्रफुल्लित नहीं होता।

कच्चे आम और पके आम में जितना अंतर है, उतना ही अंतर बाह्य क्षणिक आनंद और प्रसन्नता के बीच है। ऐमेडो ब्रेगीजे ने व्यंग्य में कहा है कि आनंद एक ऐसा फल है, जिसे अमेरिकन कच्चा ही खा जाते हैं।

मनुष्य आनंद को ढूंढ़ता है। लेकिन आनंद ऐसे मनुष्य को ढूंढ़ता है, जो आनंद में जीना जानता हो और पचा पाता हो। मनुष्य बाहर से खुश रहने के लिए आनंद को ढूंढ़ता है, लेकिन अंदर से अशान्त हो और सच्ची मस्ती से अलिप्त हो तो वो आनंदित रह नहीं सकता! आनंद की सर्वोच्च स्थिति यानि प्रसन्नता, जहाँ सुख-दु:ख की अनुभूति भी नगण्य बन जाती है। पहुँचे हुए महान व्यक्ति व संत पीड़ा को भी ईश्वरदत्त आनंद मानते हैं। एक शेर है - 'शमा और परवाने की हालत से यह ज़ाहिर हुआ, ज़िंदगी का लुत्फ आनंद में कुछ जल-जल के मर जाने में है।'

मनुष्य आनंद को दूसरों की नज़र से निहारता है, इसीलिए दूसरों के जैसा आनंद खुद को मिले उसकी चिंता में खुद के आनंद को गँवा बैठता है। खलील जिब्रान ने एक प्रसंग में लिखा है 'नील नदी के किनारे शान्त लहरों के समय एक जरख नाम का प्राणी और

- शेष पेज 7 पर...

भगवान की श्रीमत को फॉलो करने वाले बनते भाग्यवान

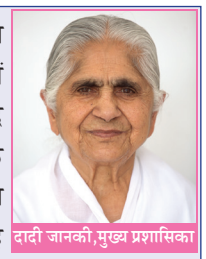
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

वर्तमान समय दुनिया में चारो ओर मनुष्य चिंताओं में हैं, उन सबकी चिंताएं मिटानी हैं। उसके लिए शुभ चिन्तन में रहना है और सारे विश्व का शुभ चिन्तक बनना है, यह बड़ा कोर्स है। बाप समान बनने के लिए शुभचिन्तन है। मेरा बाबा कैसा है, हमको देख दुनिया की आँखें खुल जाये, यह कौन हैं? जैसे सूर्य की किरणें मिल रही हैं, ऐसे हमें भी मास्टर ज्ञान सूर्य और ज्ञान सागर बनना है। जैसे सागर को देखो तो आसमान और सागर इकट्ठे दिखाई पड़ते हैं, वण्डरफुल!

बाबा हमेशा तीन बातें कहते थे, बच्चे मधुबन आते हैं एक तो रिफ्रेश होने के लिए, दूसरा बैटरी चार्ज करने के लिए, जिसकी बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है, वो चलते-चलते खड़े हो जाते हैं। उन्हें अगर किसी का सहयोग मिलता है तो शक्ति आ जाती है। तीसरा मधुबन में आते हैं बादल भरने के लिए, बादल बन करके जाए वर्षा करेंगे। साकार बाबा की कई बातें हर पल हर घड़ी स्मृति में आती हैं, और कुछ याद नहीं आता। बाबा के चरित्र और बोल, बाबा की दृष्टि, बाबा की भावना थी कि सबका भला हो। मुझे यह गीत बहुत अच्छा लगता था दु:खियों का दु:ख दूर करने वाले तेरा दु:ख दूर करेगा राम...यह प्रैक्टिकल देखा और हर पल यही अनुभव है।

हमारा सब न्यारा है, वण्डरफुल है। पहले देहभान से न्यारा होकर देखो तो पता पड़ेगा कि हम सब एक दो से न्यारे हैं। हम कहें दोनों एक जैसे हों, नहीं हो सकता है, इम्पॉसिबुल है, परन्तु भाग्यवान हैं, सौभाग्यवान हैं, पदमापदम भाग्यवान हैं, जो बाबा के महावाक्यों को कदम-कदम पर फॉलो करते हैं। बाबा कहते सी फादर फॉलो फादर। बाबा के यह महावाक्य वरदान के रूप में काम करते हैं, तब तो आज सपूत बन सबूत दे रहे हैं।

तो सिर्फ इन आँखों से किसी को नहीं देखो तब यह आँखें बहुत अच्छा काम करेंगी। तब ओनली सी फादर ,फॉलो फादर कहेंगे। तो और कुछ नहीं करना है, कहना भी नहीं है, सोचना भी नहीं है। कर्तापन के भान से परे रहना है। मैंने कुछ नहीं किया है सिर्फ फॉलो किया है। मान-अपमान की इच्छा से परे अभोक्ता, ऐसी स्थिति बनानी है। बाबा की मदद भी तभी खींच सकते हैं जब समय की वैल्यु है। संकल्प, समय, स्वयं, सहयोग, सच्चाई उसमें भी खास सच्चाई से संकल्प में कोई ऐसी बात आई नहीं है जो मुझे सोचना व कहना पड़े कि इनका संस्कार ऐसा है। यही बात बोलेगा, यही करेगा.....गई इज्जत। मैं अकर्ता हूँ, जो बाबा को कराना है, ड्रामा एक्यूरेट है, यज्ञ रचता बाबा है, बाबा का यज्ञ है। बाबा की सेवा में मददगार बनने वालों को रिटर्न बाबा दे रहा है, हमको सिर्फ शुभ चिंतक रहना है। हम यह नहीं कह सकते हैं कि यह देखो क्या करता है, ऐसे अंगुली नहीं उठानी है, यह हमारी ड्युटी नहीं है, हमारी ड्युटी है, अगर देवता बनना है तो पहले सूक्ष्मवतन वाले फरिश्ता बनकर रहना है। देवता तो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार बनेंगे। बनाने वाला बाबा बैठा है, बनाना उसका काम है, बनना मेरा काम है। जो ड्रामा में होगा, तो भावी पहले या भगवान पहले या भाग्य पहले? मैंने कहा जो भाग्य में होगा....यह नहीं कहना है, भाग्य बनाना है कल्प-कल्प के लिए।

जो राइट है वही करना है, वह छोड़ना नहीं है, यही किसी भी सिचुएशन का सोल्यूशन है। कोई कारण नहीं बताना है, कारण कोई है नहीं। तो चेक करके चेंज कर लो। जो करना है अब कर लो, कल किसने देखा...यह मंत्र है। जो बाबा कहे, जैसे कहे, वैसे मुझे करना है। हिम्मते बच्चे मददे बाप। सच्चाई, प्रेम, विश्वास से करते चलो तो अन्त मते सो गते अच्छी होगी, यह गैरंटी है।

स्वयं की शुद्धता से सधता परमात्म सानिध्य

दादी हृदयमोहिनी,
अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा कहते हैं कि ब्राह्मण जीवन में अशुद्धता को पूर्णत: खत्म करना है, यही हमारा लक्ष्य भी है। लेकिन फिर भी अशुद्ध संकल्प आ जाते हैं। तो वो अशुद्ध संकल्प तब आते हैं जब मार्जिन हो। हमने कभी अशुद्ध देखा ही नहीं है, अशुद्ध का अनुभव ही नहीं है और साथ-साथ बाबा का वरदान भी है। बचपन से हम बाबा के पास आ गये। शुद्ध का अनुभव ज़्यादा है इसलिए वह खींचता है। बाकी ऐसे नहीं है कि कोई कमी ही नहीं है। पुरूषार्थ तो रहता ही है। बाकी अशुद्ध तब आता है जब बुद्धि फ्री होती है। जिन्होंने शुरू से लेकर बाबा की पढ़ाई पर, श्रीमत पर पूरा अटेन्शन दिया है, बुद्धि को बिज़ी रखा है उनके पास अशुद्ध संकल्प आ ही नहीं सकते। बुद्धि को बिज़ी रखो तो माया वा व्यर्थ संकल्प विकल्प आ नहीं सकते। जो बाबा ने सुनाया है उसकी गहराई में जाओ, अन्तर्मुखी होकर उस पर मनन करो। इधर उधर की बातों में इन्ट्रेस्ट न हो, संग से सम्भाल करो। अपना टीचर स्वयं बनकर अपने आपको रोज़ होमवर्क दो, तो व्यर्थ वा अशुद्ध संकल्पों से बचे रहेंगे। बाबा तो हमारा टीचर है ही, लेकिन बाबा ने जो पढ़ाया है उसको अपने जीवन में उतारना अर्थात् अपना टीचर आप बनना, अपनी चेकिंग आप करना। जो अपने आपका टीचर बनता है वह सदा बिज़ी होने के कारण दूसरी सब बातों से फ्री हो जाता है। पुरुषार्थ के मार्ग पर निर्विघ्न आगे बढ़ते रहने के लिए हर पल बाबा के इशारों को कैच करते रहना बहुत ही आवश्यक है। लेकिन बाबा के इशारे कैच करने के लिए हमारी बुद्धि बहुत क्लीयर होनी चाहिए। अगर हमारी बुद्धि में और-और बातें होंगी तो हम इशारों को कैच नहीं कर सकेंगे। बाबा की प्रेरणायें वा संकल्प कैच करने के लिए पहले अपनी बुद्धि को बिल्कुल साफ स्वच्छ रखना है। जो शिक्षा बाबा हमको देता है या बाबा ने जो मर्यादायें बताई हैं, श्रीमत और मर्यादायें दोनों ही जीवन में आवश्यक हैं। श्रीमत अर्थात् डायरेक्शन और मर्यादायें हमारे जीवन का एक संयम-नियम हैं। मर्यादायें ही हमारे सेफ्टी की लकीर हैं। अगर हम सुबह से रात तक मर्यादा और श्रीमत के प्रमाण चलें तो बुद्धि क्ली यर रहेगी, खाली रहेगी। फिर हम स्पष्ट बाबा के श्रेष्ठ संकल्प कैच कर सकेंगे। अगर बुद्धि बिज़ी होगी या बुद्धि में व्यर्थ संकल्पों का किचड़ा होगा तो जहाँ व्यर्थ है वहाँ समर्थ कैच नहीं कर सकेंगे। भल बुद्धि में परचिंतन न भी हो, लेकिन अपनी ही प्रवृत्ति में नहाने धोने आदि में ही बिज़ी रहते हैं, बाबा से बुद्धियोग लगाने की फुर्सत नहीं है तो भी हम बाबा की प्रेरणाओं को कैच नहीं कर सकेंगे। इसके लिए बुद्धि खाली और स्वच्छ चाहिए। बाकी संबंध के लिए तो बाबा ने बता ही दिया है कि हर समय बाबा से भिन्न-भिन्न संबंधों का अनुभव करते रहो। बाबा के इशारों को कैच करने में भी कइयों को यह संशय होता है कि यह बाबा की प्रेरणा है या मनमत। तो यह संशय तब होता है जब हमारी बुद्धि पहले से ही संकल्पों में बिज़ी रहती है। समझो हमें कोई बात बाबा से रूहरिहान में पूछनी है तो पहले हमारे ही संकल्प चलते हैं - हाँ बाबा यही कहेगा, बाबा का यही होगा, यह जो संकल्प होता है तो बाबा का भी वही कैच करते हैं। अगर बुद्धि हमारी फ्री है, बाबा से ही रूहरिहान में जवाब लेना है तो पहले बुद्धि में अपने संकल्प मिक्स नहीं चाहिए। अपने मिक्स होंगे तो गड़बड़ हो सकती है। अपने संकल्पों को ही बाबा का समझ लेंगे। अगर मैं बाबा की दी हुई श्रीमत से, अपने संकल्प से किसी बात को हल कर सकती हूँ तो कोई हर्ज़ा नहीं है। लेकिन जहाँ समझते बाबा से ही पूछकर करना है तो उसके लिए अपनी बुद्धि फ्री रखो। अगर अपनी मत मिक्स होगी तो करते समय भी संकल्प आयेगा कि यह मेरा है या बाबा का है। उस समय भी दुविधा होगी। बाबा की क्लीयर मत होगी तो दुविधा नहीं होगी। बीज अच्छा है तो फल अवश्य निकलेगा। जिस समय उसे आप प्रैक्टिकल में लायेंगे उस समय हल्कापन और खुशी होगी। मूंझ नहीं होगी। जैसे बाबा की मुझे टचिंग हुई, हाँ यह करो। मैंने संकल्प किया बाबा मैं यह काम करूँ या न करूँ तो बाबा जो हाँ या ना का रेस्पॉन्स देगा उससे हमारी बुद्धि की हलचल खत्म हो जायेगी। हाँ या ना की दुविधा तब तक है, जब तक मेरे संकल्प मिक्स हैं। तीसरी बात - जिस समय वह काम करेंगे, काम का फल यथार्थ निकलेगा, उससे पता पड़ेगा यह बाबा की टचिंग थी, मेरी नहीं।